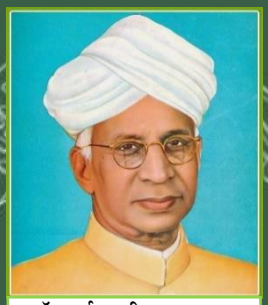

डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

माह, सितम्बर 2023

नवम वर्ष अंक - 04

श्री मन्नुराम नायक — ए जें डा 1

श्री डोमन ध्रुव — ए जें डा 2

वीरेंद्र कुमार देवांगन — ए जें डा 3

भरत कुमार डोरे — ए जें डा 4

पवित्रा लकड़ा — ए जें डा 5

श्री संकर्षण पटेल — ए जें डा 6

शैलकुमार पाण्डेय — ए जें डा 7

दीपक प्रकाश — ए जें डा 8

मीना जायसवाल — ए जें डा 9

पवन कुमार सिन्हा — ए जें डा 9

राजकुमारी कंवर — ए जें डा 10

राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा, छत्तीसगढ़

एजेंडा एक: FLN में दक्ष हैं

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में बुनियादी साक्षरता एवं संख्यात्मक ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये 2027 तक का समय निर्धारित किया है। इसके अंतर्गत प्रत्येक बच्चे को अपने कक्षा स्तर की विषय वस्तु को पढ़ना व गणितीय संक्रियाओं को समझ के साथ हल करना सीखना है। छत्तीसगढ़ स्कूल शिक्षा विभाग ने इस हेतु सुघ्घर पढ़वईया योजना की शुरुआत की है जिसमे शिक्षकों को अपने शाला के बच्चों में एफ.एल.एन. में दक्ष कर चुनौती स्वीकार कर उच्च अधिकारियों को अपने शाला में आमंत्रित किया जाता है। शाला के साथी शिक्षकों के साथ मिलकर एफ एल एन में दक्ष बनाने के लिए

बच्चों को उनकी भाषा में स्थानीय सहायक सामग्री बनाना सीखा कर हमेशा बच्चों को करके सीखने का अवसर देकर गणितीय संक्रियओं के साथ पढ़ना, लिखना सिखाने का अदभुत कार्य शासकीय प्राथमिक शाला बोकराटोला दुर्गकोण्दल जिला कांकेर के प्रधान पाठक मन्नुराम नायक ने किया एवं शासन की इस चुनौती को स्वीकार कर खुले तौर पर अपनी शाला के बच्चों की वास्तविक स्थिति का आंकलन कराया । मिशन का विजन बुनियादी साक्षरता और अंक ज्ञान के सार्वभौमिक अधिग्रहण को सुनिश्चित करने के लिए एक सक्षम वातावरण तैयार किया, ताकि प्रत्येक बच्चा कक्षा के अंत में पढ़ने, लिखने और अंक ज्ञान में वांछित सीखने की दक्षता हासिल कर सके ।

जिले की टीम ने निरीक्षण कर प्रधान पाठक की चुनौती को सही माना । इस शाला को विभाग ने सुघ्घर पढ़वईया में गोल्ड कैटेगरी में शामिल किया है।

विद्यालय की एक और खासियत यह है कि यहाँ शिक्षकों द्वारा शाला समय के बाद बच्चों को एकलव्य, नवोदय व जवाहर उत्कर्ष विद्यालय में प्रवेश परीक्षा की तैयारी भी कराई जाती है जिसमें प्रतिवर्ष बच्चों का चयन होता है इससे प्रभावित हो कर अन्य गांव के लोग भी अपने बच्चों को इनके शाला में भेजते है।

चर्चा के तीन बिंदु -

1. आपने भी सुघ्घर पढ़वईया की चुनौती स्वीकार की है ।
2. आप अपनी शाला को किस कैटेगरी में मानते हैं ।
3. बच्चों को एफ.एल.एन. में दक्ष बनाने के लिए आपके नवाचार ।

HAPPY TEACHERS DAY

एजेंडा दो: आकर्षक शाला परिसर से शैक्षिक वातावरण

"शिक्षा सिर्फ पढने लिखने का नाम नही है बल्कि अपने ज्ञान को एक पीढ़ी से दुसरे पीढ़ी में हस्तांतरित करने का नाम ही शिक्षा है ।" अपने अर्जित ज्ञान को विद्यालय के बच्चों में रोपित करने का काम शासकीय प्राथमिक शाला परसकोल जिला रायपुर के सहायक शिक्षक श्री डोमन ध्रुव ने किया है। प्रारंभिक शिक्षा गरियाबंद के सुदुर जंगली देवसरा गांव में प्राप्त करते समय अपने गुरु श्री गंगाराम नेताम के विद्यालय के प्रति समर्पण और लगाव को करीब से देखा था। जिन्होंने अपने विद्यालय को एक सकारात्मक वातावरण दिया था। अच्छे वातावरण में पढ़े शिक्षक ने परसकोल के प्राथमिक शाला में उपस्थित हुए तो पहले दिन से ही उन्हें एक अजीब सी पीड़ा होने लगी थी रंगहीन शालाभवन, उखड़ा-उखड़ा स्कूल का माहौल और बच्चों की कम संख्या में उपस्थिति ने उन्हें एक चुनौती दी की शाला को कैसे आकर्षक बनाया जाए एवं बच्चों की उपस्थिति में वृद्धि के साथ पढने का वातावरण तैयार किया जाए। इसके लिए सबसे पहले उन्होंने ने गुरु से सीखी हुई चित्रकारी कला से कक्षा में स्वयं पेंटिंग कर पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु को दीवालों में उकेरा । शाला परिसर के उजड़े मैदान में हरियाली लाने के लिए स्वयं गड्डा खोदना, क्यारी बनाकर फुल, फुलवारी लगाया। इस कार्य से विद्यालय के अन्य शिक्षक, पालक एवं समुदाय के लोग प्रेरित होकर डोमन के इस मुहिम में शामिल हुए। अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को चित्रकारी (पेंटिंग) सीखाया जो व्यवासायिक पेंटर बन गए है। आकर्षक शैक्षिक वातावरण से बच्चे प्रेरित होकर अनियमित बच्चे भी रोज स्कूल आते है। कक्षा कक्ष एवं शाला परिसर में बने चित्रकारी एवं विषयवस्तु को पढ़कर समझते एवं सीखते है। शिक्षक के प्रयास से आकर्षक शाला परिसर से शैक्षिक वातावरण को अवलोकन करने के लिए आस-पास के विद्यालय के विद्यार्थी, शिक्षक के साथ-साथ जिले के अन्य ब्लाकों के शिक्षक भी अवलोकन के लिए आते है।

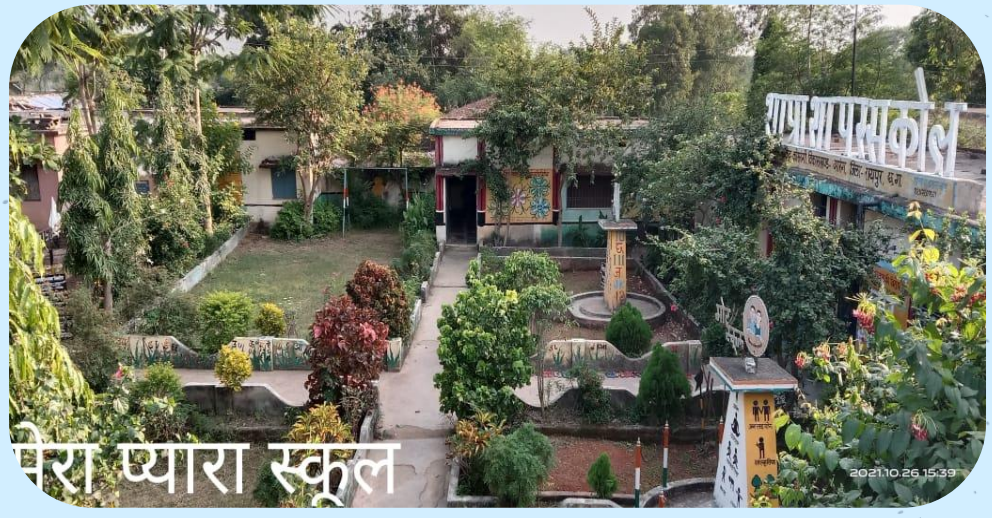

चर्चा का विषय -

1. विद्यालय के वातावरण को सीखने के अनुकुल बनाने में आपका प्रयास ।
2. सकारात्मक परिवेश के परिणाम ।

एजेंडा तीन: सहायक सामग्री से भरपूर कक्ष

शासकीय कन्या माध्यमिक आश्रम शाला कैका विकासखंड बीजापुर में पदस्थ वीरेंद्र कुमार देवांगन एक ऐसे शिक्षक है जिन्होंने विद्यालय के सृजन कक्ष में बच्चों के लिए सहायक शिक्षण सामग्री से सजा कक्ष बनाने का प्रयास किया है बच्चों को पढ़ाते समय इन्हीं शिक्षण सामग्री का उपयोग कर उन्हें खेल-खेल में या शिक्षण के दौरान सिखाए जाते हैं, बच्चे सहायक सामग्री को स्पर्श कर स्वयं इसका अनुभव करते हैं, बच्चे स्वयं सामग्री का निर्माण करते है जिससे वे करके सीखनाअवधारणा एवं सहायक शिक्षक सामग्री से बच्चों का सीखना आसान और रुचिपूर्ण सरल हो जाता है।

सहायक शिक्षण सामग्री कलरफुल होने के कारण बच्चों को आकर्षित करते हैं, सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण करते समय सभी विषयों का ध्यान रखा गया है हिंदी, गणित, विज्ञान व भूगोल विषय के भी सहायक शिक्षण सामग्री बच्चों के साथ मिलकर बनाया गया है। सहायक शिक्षण सामग्री का रखरखाव एक चुनौतीपूर्ण कार्य है इसलिए इसका निर्माण करते समय विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

शिक्षा को अधिक से अधिक रोचक बनाने के लिए समय-समय पर विद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रकार के शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग कर नवाचार किया जाता है । अपनी पाठ्य सामग्री को इन रोचक सहायक सामग्री के माध्यम से प्रस्तुत करने से न केवल छात्रों का ध्यान केन्द्रित होती है बल्कि उन्हें उचित प्रेरणा भी मिलती है चाहे वह वास्तविक वस्तु हो, चित्र, चार्ट या कोई तकनीकी उपकरण सभी से छात्रों के मस्तिष्क में एक चित्र निर्माण होता है जिससे बच्चे उन अवधारणाओं को हमेशा के लिए सीख जाते है । बच्चो के सीखने की गति में सुधार, छात्रा को अधिक क्रियाशील बनाने, बच्चों में तथ्यात्मक सूचनाओं को रोचक ढंग से प्रस्तुत करने एवं पाठ के प्रति छात्रों में रुचि जागृत करने हेतु लगातार कार्यरत है।

चर्चा करें -

1. सहायक शिक्षण सामग्री बच्चों के सीखने में मददगार है।
2. मेरे विद्यालय में भाषा, गणित, विज्ञान में TLM का उपयोग होता है।
3. TLM निर्माण कार्यशाला की आवश्यकता।

HAPPY TEACHERS DAY

एजेंडा चार: सामुदायिक सहभागिता

किसी भी शाला में उपलब्ध भौतिक व मानवीय संसाधनों के समुचित सुनियोजित उपयोग का शैक्षिक गुणवत्ता पर सीधा प्रभाव पड़ता। संस्था के उत्कृष्टता का मूल आधार वहाँ के समुदाय की संस्था के प्रति जुड़ाव है। समुदाय के प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोग से हम अपनी संस्था को नई मुकाम तक ले जा सकते हैं। ऐसे ही मुकाम की नई इबारत लिखने का काम किया है कबीरधाम जिले के वनांचल क्षेत्र पंडरिया विकासखण्ड के शासकीय प्राथमिक शाला गुंझेटा के शिक्षक श्री भरत कुमार डोरे जिन्होंने समुदाय के साथ लगातार बैठक कर उनकी अहमियत का एहसास कराकर सरकारी स्कूल को असरकारी में बदल दिया। स्कूल सरकार के नही हमर अऊ हर गाँव के आये। हमें अपने गाँव के स्कूल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए यथा संभव प्रयास करना चाहिए। शिक्षक ने समुदाय के साथ मिलकर सबसे पहले शाला के लिए तीन वर्षीय शाला विकास योजना बनाकर एक बुनियाद रखा। हमारी संस्था के लिए प्राथमिकता क्या है और किस तरह से हम काम करेंगे। इसी योजना के तहत प्रथम दो वर्ष में समुदाय ने शाला के लिए प्रवेश द्वार, पीने के लिए स्वच्छ जल हेतु वाटर फिल्टर, मध्यान्ह भोजन, किचन गार्डन एवं शौचालय हेतु रनिग वॉटर, शाला की सुरक्षा हेतु चारदीवारी, बच्चों को शाला तक आने के लिए सुगम रास्ता बनाने का कार्य पूर्ण करते हुए। शैक्षिक गुणवत्ता हेतु वातावरण तैयार किया। शाला में प्रिंटरिच गतिविधि, पूरे गाँव में दीवाल लेखन व रंग रोगन का कार्य किया। अप्रवेशी व अनियमित बच्चों को शाला में बनाये रखने के लिए प्रोत्साहन योजना , बच्चों के साथ शाला में समुदाय के लिए चलित पुस्तकालय का संचालन करवाया। शिक्षकों की कमी को दूर करने के लिए ग्राम के पढ़े लिखे नवयुवकों, शिक्षाविदों नियमित शाला में मार्गदर्शन देने के प्रेरित किया गया। माताओं व बुजुर्गों को कहानी सुनने के अवसर देने एवं स्थानीय कामगारों को उनके कौशल को प्रदर्शित करने हेतु आमंत्रित किया गया। समय समय पर बच्चों की गुणवत्ता जांच सामाजिक अंकेक्षण के तहत की कराकर आवश्यक सुधार के प्रयास किया। समुदाय के सहयोग का यह अनूठा उदाहरण हम सब को प्रेरित करता है। समुदाय के सहयोग से ही शाला समय के बाद शिक्षक के द्वारा नवोदय, जवाहर उत्कृष्ट विद्यालय, एकलव्य विद्यालय की तैयारी कराया जाता यही कारण है कि आस पास के ग्रामीण अपने बच्चों को गुंझेटा शासकीय शाला (मैग्नेटिक स्कूल) में प्रवेश दिलाने के लिए आतुर रहते हैं।

चर्चा -

1. आपने विद्यालय के लिए शाला विकास योजना विद्यालय विकास योजना बनाते समय की बातों को प्राथमिकता दी है।
2. समुदाय की सक्रियता के लिए आपके द्वारा किया गया प्रयास।
3. शैक्षिक गुणवत्ता हेतु समुदाय के साथ किस प्रकार से नवाचार किया जावे?

एजेंडा पांच: बस्ताविहीन पढ़ाई

अपने प्राकृतिक वादियों के लिए छत्तीसगढ़ के शिमला के नाम से मशहूर मैनपाट के नाम से आप परिचित है। बीहड़, जंगल और पहाड़ से घिरे इसी क्षेत्र में एक गांव है कर्रा यहाँ पर अधिकांश परिवार गरीब एवं अशिक्षित है इन्हें जिनका जीवन वनोपज संग्रह पर निर्भर है। इसी गांव के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला की शिक्षिका है पवित्रा लकड़ा जो बच्चों को अध्यापन के साथ-साथ छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के द्वारा चलाई जा रही बस्ता विहीन कक्षा का अनोखा संचालन कर रही है। ऐसे तो शासन ने प्रत्येक शनिवार को बैगलेस डे घोषित किया है जिसमें बच्चों में सहसंज्ञानात्मक कौशल विकसित करने की गतिविधि आयोजित करने कहा गया है। शिक्षिका अपने सहकर्मियों के साथ विद्यालय के विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ जीवन उपयोगी व्यवासायिक कौशल में दक्ष कर रही है। बस्ताविहीन दिवस शनिवार के अलावा प्रतिदिन विद्यालय समय के बाद गायन, वादन, पेंटिंग, लेखन एवं अभिव्यक्ति कौशल हेतु सार्थक प्रयास करती है। गांव के बच्चे जो बोलने में झि झकते थे धीरे-धीरे उनकी अभिव्यक्ति क्षमता का विकास हो रहा है । शिक्षिका के इस प्रयास से बच्चे अब बेझिझक मंचों पर अपनी प्रस्तुति दे रहे है।

शिक्षिका स्वयं रूचि लेते हुए अपने विद्यालय के बच्चों को अभिनयकला, कसीदाकारी, रंगोलीकला, मेहंदीकला, पेपरवर्क, स्थानीय परिवेश की चीजों से उपयोगी सामग्री बनाने में निपुण बना रही है। शिक्षिका कहती है कक्षा में अध्यापन तो कोई भी कर लेता है लेकिन पढ़ाई के साथ अन्य हुनर सीखते है, वही कौशल जीवनभर उनके काम आता है।

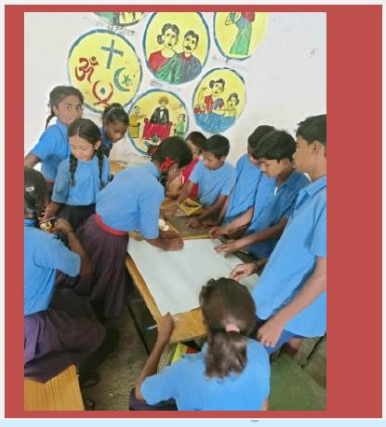

चर्चा के विषय :-

1. बस्ताविहीन पढ़ाई में मेरी दृष्टिकोण में ।
2. बस्ताविहीन पढ़ाई में किन-किन नए विषयों को शामिल किया जा सकता है?
3. बस्ताविहीन पढ़ाई छात्रों के लिए सार्थक है।

HAPPY TEACHERS DAY

विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने, पर्यावरण का संरक्षण करने प्रकृति का मानव जीवन में अहमियत की जानकारी देने के लिए ईको क्लब का अपना अलग योगदान होता है। विद्यार्थियों को अपने आसपास के पर्यावरण एवं जैव-विविधता के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील बनाने तथा पर्यावरण गतिविधियों एवं प्रोजेक्ट्स पर कार्य करने के लिए क्षमता प्रदान करने के उद्देश्य से शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक विद्यालय में ईको क्लब की स्थापना की गई है। इस हेतु संकर्षण पटेल व्याख्याता शासकीय उच्च.माध्य.विद्यालय किसड़ी जिला महासमुन्द ने ईको क्लब गतिविधियों में पर्यावरण, जैवविविधता, जलवायु स्थानीय पारिस्थितिकी, जल संरक्षण, मृदा संरक्षण ऊर्जा संरक्षण, पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आदि के प्रति बच्चों में जागरूकता लाने संबंधी कार्यक्रम आयोजित करते हैं। ईको क्लब के माध्यम से शाला और आसपास के गांवों में प्रदर्शनी, पेंटिंग, स्लोगन लेखन, पौधरोपण, अपशिष्टों के सुरक्षित निपटान, पर्यावरण एवं स्वास्थ्य पर आधारित चल-चित्रों का प्रदर्शन, अभिभावकों व सेवानिवृत्त, पर्यावरण के जानकारों, पर्यावरण के लिए कार्य करने वाले व्यक्तियों की वार्ता आदि का आयोजन करते है। शाला परिसर फूलों से सुसज्जित है साथ ही बहुत से औषधिय के पौधे लगाए गए है। ईको क्लब के माध्यम से क्लीन - ग्रीन- ईको फ्रेंडली विद्यालय की भावना को प्रबल करने की दिशा में कार्य किया जा रहा है तथा पर्यावरणीय संचेतना और पर्यावरण संरक्षण संवर्धन हेतु बचपन से ही नींव को मजबूती प्रदान करने के प्रयास किये जाते हैं।

चर्चा की मुद्दे।

1. विद्यालय में ईको क्लब की सार्थकता पर मेरा दृष्टिकोण।
2. मेरे विद्यालय में ईको क्लब के संचालन विशेषता यह है।
3. शाला में ईको क्लब को बेहतर बनाने की मेरी योजना ऐसी है।

"सफलता के शिखर पर पहुंचना जीत का परिचायक है किंतु अपने प्रयासों पर अडिग रहना भी जीत से कम नहीं .....!"

अपने नवाचार शिक्षण पद्धति एवं व्यक्तिगत चुनौतियों के साथ विपरीत परिस्थितियों में भी निरंतर अपने कार्यों का संपादन करते हुए जीत की नई परिभाषा **गढ़ने वाले शिक्षक शैलकुमार पाण्डेय प्रधान पाठक शासकीय अजजा बालक आश्रम मसनियाखुर्द जिला सक्ति विज्ञान के शिक्षकों के लिए प्रेरणास्रोत हैं। इन्होंने अपने विद्यार्थियों में विज्ञान के प्रति अभिरुचि बढ़ाने के लिए स्थानीय परिवेश की सामग्रियों का उपयोग कर सरल-सरल प्रयोगों द्वारा विज्ञान की कठिन अवधारणाओं को सहज बनाने का प्रयास कर दिखाया है। इन्होंने अपने विद्यालय के सभी कक्ष में विज्ञान कार्नर का निर्माण किया है जिसमें बच्चों की कक्षा स्तर के प्रयोगों के अलावा वर्तमान परिवेश में घटित होने वाली वैज्ञानिक खगौलिक घटनाओं का मॉडल बच्चों को सीखाते है। इन्होंने विद्यालय के शिक्षकों के अलावा जिले के अन्य शिक्षकों को भी विज्ञान के प्रति रूचि बढ़ाने के लिए प्रतियोगिता सेमीनार जैसे मंगल महोत्सव का आयोजन करते है एवं घरेलु किचन सामग्री को विज्ञान से जोड़कर अनोखा प्रायोगिक कार्य करवाते है। इन्होंने विशेष रूप से सौरमंडल, रॉकेट, जलचक्र, शरीर-रचना तथा विभिन्न रासायनिक प्रयोगों को चलित रूप से प्रदर्शित करते है। इन्होंने विज्ञान के प्रयोग के माध्यम से अंधविश्वास को दूर करने के बहुत से प्रयोग बच्चों को सीखाएं है। विज्ञान की अवधारणाओं को सरलता से सीखाने के लिए छोटे-छोटे विज्ञान का प्रयोग करते रहते है और बच्चे जादू समझकर खेल-खेल में रूचि लेते हुए विज्ञान की रासायनिक अवधारणाओं को सीख जाते है। वर्तमान समय के अनुसार छात्रों की रूचि और आवश्यकताओं के अनुसार वैज्ञानिक और व्यावसायिक ज्ञान भी प्रदान करते रहते है।**

HAPPY TEACHERS DAY

चर्चा करें -

1. **बच्चों को विज्ञान पढ़ाने के लिए प्रयोग आवश्यक है।**
2. **अपने विद्यालय में विज्ञान कार्नर को किस प्रकार बना सकते है?**
3. **अन्य विषय के साथ विज्ञान का समन्वय कैसा हो ?**

HAPPY TEACHERS DAY

"शिक्षक साधारण नहीं होता है वह मस्तिष्क का बनाने वाला इंजीनियर होता है" इसी बात को नवाचारी नेशनल अवार्ड प्राप्त दीपक प्रकाश प्रधानाध्यापक बालक आश्रम अमरावती विकासखंड माकड़ी जिला कोंडागांव ने साबित किया है जिनका विचार है की विभिन्न नवाचार के माध्यम से किसी भी बच्चे या शिक्षक की भावनात्मक एवं मस्तिष्क सोच उनकी तार्किक सोच को अपनी कलाकृति के माध्यम से किसी भी प्रोजेक्ट में अपनी कार्यक्षमता को प्रस्तुत किया जा सकता है और शब्दों को ना बोल कर भी अपने मन की बात को विषय वस्तु पर प्रकट किया जा सकता है या दिए गए विषय पर प्रोजेक्ट पर अपनी कार्य कुशलता को जाहिर कर सकता है।

खेल खेल में प्रश्न उत्तर
दीपक प्रकाश (नेशनल अवॉर्ड)

H	E	M	P	G	MR
1 नाम	2 Your Name	3	4 पेड़ का नाम बताओ	5 प्रधानमंत्री का नाम बताओ	
7 फल का नाम	8 Your's Father's Name	9 2+2= 61+42=	10 मांसाहारी जन्तु के नाम बताओ		
11 पालतू जानवर का नाम	12 Your's Teacher's Name	13 5+2= 28+26=		14 मुख्यमंत्री का नाम बताओ	360
16 शिक्षक का नाम	17 Wild Animal Name	18	15 सर्वाहारी जन्तु के नाम बताओ		
21 फूल का नाम	22 Domestic Animal Name	23	19 ठोस पदार्थों का नाम बताओ	20 राज्य के शिक्षा मंत्री का नाम बताओ	
25 पक्षी का नाम	26 Fruits Name	27	24 द्रव पदार्थों का नाम बताओ	28 एक वर्ष में कितने दिन होते हैं	
30 सब्जियों का नाम	31 Vegetables Name	33 5-3= 12-8=	29 गैस पदार्थों का नाम बताओ		32
35 यातायात के साधन का नाम	37 Flowers Name	38 12-06= 16-9=	34 संसार के सबसे बड़े जानवर का नाम बताओ	36 राष्ट्रपति का नाम बताओ	L
40 धार्मिक स्थान का नाम	42 Birds Name	43 2x4= 12x8=	39 मनुष्य में स्थायी दाँतो की संख्या	41 भारत देश कब आजाद हुआ	
45 भारत के नेता का नाम	46 Leaders of India	48 12/3 81/9	44 प्रजनन किसे कहते हैं	47 सूर्य मंदिर किस राज्य में है	
50 जंगली जानवर का नाम		50	49 पृथ्वी का सबसे बड़ा जानवर का नाम बताओ		
846+787 =	842-286=	10x5= 16x15=	208/2=		

खेल-खेल में शिक्षा नवाचार का क्रियान्वयन विभिन्न खेलों के माध्यम से किया जा रहा है जैसे ज्ञान की सांप सीढी एक खेल है

ज्ञान की सांप-सीढ़ी में पारंपरिक खेल की भांति सांप और सीढ़ी नहीं होते। अपितु रोचक ढंग से प्रश्नों का जाल बुना होता है, जिससे छात्रों को कक्षा में एकाग्रचित्त होकर शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए पाठ को आत्मसात करने में मदद मिलती है और प्रतियोगी वातावरण का निर्माण होता है।

ज्ञान की सांप-सीढ़ी का खेल किसी भी कक्षा के किसी भी विषय के पुनः अध्ययन के लिए लाभकारी है।

कम लागत या शून्य लागत पर प्रोजेक्ट तैयार कर उसे सभी शालाओं पर क्रियान्वित किया जा रहा है बच्चों एवं शिक्षक को को शिक्षा में आने वाली कठिनाईयों को दूर करने हेतु अनुसंधान करवाया जाता है।

शिक्षा में गुणवत्ता हेतु विभिन्न नवाचार किए किए जाते हैं किए जाते हैं चौदह से अधिक राज्यों में शिक्षक दीपक प्रकाश के नवाचारों का प्रयोग किया जा रहा है। प्रश्नों के उत्तर एवं अवधारणाओं को समझा रहे हैं बच्चे अपनी कक्षा अनुसार कौशल समय से पहले ही सीखने लगे हैं और बच्चे तर्क करना, समस्या का समाधान करना सीख रहे है। इसी प्रकार नवाचारी शिक्षण सहायक सामग्री बनाकर खेल-खेल में बच्चों के रूचि के अनुसार विभिन्न विषयों के पाठ्यवस्तु को सरलतापूर्वक बच्चों को सीखा रहे है। इस प्रकार नवाचारी सीखने सिखाने की वजह से बच्चों की उपस्थिति कक्षा में बनी रहती है।

चर्चा करें -

1. आपके द्वारा किए गए नवाचार क्या है ?
2. क्या आप विद्यार्थियों को पाठ्येत्तर गतिविधियों के लिए तैयार कर सकते हैं ?

एजेंडा नौ: खिलौनों के माध्यम से सीखना

खिलौनों को अक्सर केवल मनोरंजन उपकरण का साधन माना जाता है लेकिन खिलौने बचपन के सबसे महत्वपूर्ण वर्षों के दौरान बच्चों के संज्ञानात्मक विकास का पोषण करते हैं। कोरिया जिले के प्राथमिक शाला शंकरगढ़ विकासखंड मनेन्द्रगढ़, जिला मनेंद्रगढ़ - चिरमिरी-भरतपुर की शिक्षिका मीना जायसवाल कर रही हैं खिलौने के माध्यम से किस प्रकार बच्चों को घर की छोटी-छोटी बातें जैसे किचन सेट से बच्चों को किस तरह से गैस सिलेंडर को सावधानीपूर्वक प्रयोग करना चाहिए विभिन्न फलों सब्जियों आदि के माध्यम से बच्चों को नाम, रंग, आकार बता रही है साथ ही रसोई में मां की मदद करने को प्रोत्साहित कर रही हैं। खिलौने बच्चों की इंद्रियों को संलग्न करते हैं उनकी कल्पना शक्ति को जागृत करते हैं, बच्चे एक दूसरे के साथ बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं जब बच्चों को स्कूल में खिलौने दिए जाते हैं तो बच्चे उन खिलौने की मदद से अपने पाठ्य पुस्तक के पाठों को पढ़ने में भी रुचि लेते हैं। गुड़िया गुड्डे के खिलौने से शरीर के अंगों के नाम उनके कार्यों को बताती हैं बच्चे रुचि के साथ उनकी कक्षा में आना पसंद करते हैं क्योंकि शिक्षिका द्वारा खिलौने के माध्यम से बच्चों को अलग ढंग से सोचने और स्वयं नई चीज खोजने का अवसर प्रदान किया जाता है, बच्चे अपने तार्किक और अमूर्त सोच को खिलौने के रूप में प्रदर्शित करते हैं।

इसी प्रकार बीजापुर जिले की भैरमगढ़ ब्लॉक की इंद्रावती नदी के किनारे बसे एक छोटा सा ग्राम है "कोयम" एक शिक्षक है श्री पवन कुमार सिन्हा जो संवेदनशील नक्सली प्रभावित वनांचल आदिवासी क्षेत्र पिछड़े इलाकों के गांव में जहां नेटवर्क और स्मार्टफोन की सुविधा आज भी नहीं है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी बच्चों को बेहतर से बेहतर शिक्षा मिल सके इसके लिए सतत प्रयास करते रहते हैं। शिक्षा को अधिक अधिक से अधिक रोच क बनाने के लिए समय-समय पर विद्यालय स्तर पर विभिन्न प्रकार के नवाचारों का उपयोग करते रहते है इनमें से एक है खिलौने बनाकर बच्चों को शिक्षा प्रदान करना। इससे बच्चों को बहुत प्रसन्नता होती है और बहुत ही प्रसन्नता के साथ खिलौना बनाते हैं, खिलौना खेल एवं मनोरंजन के साथ सीखने का अवसर प्रदान करता है विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करता है, खिलौने से बच्चों में खोज करने, कल्पना करने, अवलोकन करने, सृजन करने, अभिव्यक्त करने, और संलग्न होने तथा अवधारणाओं और विषयों को अधिक से अधिक समझने में मदद मिलती है। बच्चे शिक्षक के साथ मिलकर विद्यालय मैं खेल सामग्री बनाते हैं और प्रतिदिन खेल-खेल में ही शिक्षा प्रदान करते हैं।

क्या आप भी बच्चों के खिलौने बनाना, रंगो से खेलने का मौका देकर बच्चों की कल्पना को स्थान दे रहे हैं? अगर आपका जवाब हां में है तो आप बहुत ही कुशल शिक्षक हैं, जो बच्चे की सोच को महत्व दे रहे हैं और अगर आपका जवाब नहीं है तो आपके बच्चों के मन को समझना होगा और उनके साथ खेलना होगा उनकी कल्पना की उड़ान भरने का कुछ नया सीखने का मौका देना होगा।

HAPPY TEACHERS DAY

HAPPY TEACHERS DAY

हमारे राज्य की भौगौलिक परिस्थितयों के सामान ही भाषाई विविधता है। छत्तीसगढ़ के हर क्षेत्र में अपनी एक स्थानीय बोली है। राज्य में शिक्षा का माध्यम हिंदी है। स्कूल की भाषा और घर की भाषा में अंतर होने से बच्चों में सीखने की गति निम्न या धीमी होती है इसको राजकुमारी कंवर ने करीब से जाना जो शासकीय प्राथमिक शाला टेकनार कोन्टीपारा जिला दंतेवाड़ा की सहायक शिक्षिका है। मूलत: उत्तर छत्तीसगढ़ की निवासी है। जिसकी घर की भाषा छत्तीसगढ़ी व हिंदी है। शिक्षिका के रूप में जिस क्षेत्र में काम करने का अवसर मिला वहां के लोगों की स्थानीय भाषा गोंडी और हल्बी है। कक्षा में अध्यापन के दौरान बच्चे उनकी बात को सुनते और समझते नही थे। शाला में आने वाला प्रत्येक विद्यार्थी आपस में अपनी भाषा में बेहिचक फर्राटेदार बात करते एवं किसी विषयवस्तु पर तर्क करते थे। लेकिन शिक्षिका को देखते ही चुप हो जाते थे।

वे बहुत दिनों तक बच्चों की इस गतिविधि को देखती और समझती रही। उन्होंने अपने साथी शिक्षकों से वार्तालाप कर पाया की बच्चे उनकी भाषा को नही समझ पाते है। वह विद्यालय ग्राम में ही निवास कर पालक और समुदाय से उनकी स्थानीय भाषा गोंडी और हल्बी सीखी। उनके भाषा सीखने के इस ललक ने आगे बढ़ने का अवसर दिया। वह अपनी कक्षा में बच्चों को अध्यापन के दौरान उनकी स्थानीय भाषा में पाठ पर चर्चा कर गतिविधि करती है और आसानी से बच्चों को सिखाती है। बच्चे अब बहुत रूचि के साथ अपनी शिक्षिका से हर बात को साझा करते है सीखते और समझते है। शिक्षिका मानती है बच्चों के साथ उनकी भाषा में काम करने से बच्चों के अभिव्यक्ति कौशल के साथ-साथ उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

चर्चा का विषय -

1. ऐसी परिस्थिति में आप अपने विद्यालय में बच्चों को सिखाने में किस प्रकार मदद किये है ?
2. अपने विद्यालय में बच्चों को सीखाने के लिए स्थानीय भाषा की उपयोगिता।
3. मेरे विचार से सीखने में भाषा महत्वपूर्ण है।

बातें आपके संकुल की क्यों ना थोड़ी चर्चा इन पर भी हो जाये -

1. बच्चों की गुणवत्ता सुधार के लिए कुछ अलग हटकर कार्य कर रहे अपने संकुल के शिक्षकों से आप परिचित हैं ?
2. शिक्षकों के कार्यों को प्रोत्साहित करने के लिए आप किस तरह से प्रयास करते हैं ?
3. ऐसे शिक्षकों की जानकारी हमें उपलब्ध करावें।

Chandrayaan-3 की चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग

चंद्रयान-3 का चांद के दक्षिणी ध्रुव पर दिनांक 23 अगस्त 2023 को शाम 6:04 बजे सफलतापूर्वक पहुँचने पर ISRO की सभी वैज्ञानिकों के अथक प्रयास के कारण विश्व में भारत नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज हो गया है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के समीप पर पहुचने वाला भारत विश्व में पहला राष्ट्र बन गया है। इसके लिए सभी को बहुत – बहुत बधाई। देश ही नहीं, दुनियाभर के करोड़ों लोगों की नजरें चंद्रयान-3 की लैंडिंग पर टिकी हुई थीं, लेकिन जैसे ही तय समय पर विक्रम लैंडर चांद की सतह पर उतरा, सभी लोगों की हर तरफ जश्न का माहौल हो गया।

SEAS (STATE EDUCATIONAL ACHIEVEMENT SURVEY)

राज्य में NAS (National Achievement Survey) के समान CAS (Chhattisgarh Achievement Survey) माह नवम्बर 2023 में होने वाली है। जैसे की हमें ज्ञात ही है की वर्ष 2021 के NAS में हमारी राज्य की स्थिति अच्छी नहीं है। चूँकि NAS के समान ही नवम्बर 2023 में राज्य स्तरीय उपलब्धि मूल्यांकन होने वाला है। अतः आप सभी शिक्षक अपने शालाओं में समग्र शिक्षा/SCERT द्वारा दिए गये (WhatsApp ग्रुप/मेल आदि के द्वारा) पूर्व वर्षों में हुए NAS के सैंपल /मॉडल पेपर के द्वारा बच्चों में अधिक से अधिक अभ्यास करावें। बच्चों को इसी प्रकार के सोंच समझकर जवाब देने वाले प्रश्नों (HOTS – Higher-Order Thinking Skills) का अधिक से अधिक बच्चों को अभ्यास करावें। जिससे हम इस उपलब्धि परीक्षण में बेहतर प्रदर्शन कर राज्य को टॉप 10 में जगह बनाने सफलता प्राप्त कर सके।

वीरगाथा 3 .0

वीरगाथा परियोजना की स्थापना 2021 में वीरता पुरस्कार पोर्टल यानी गैलेंट्री अवार्ड्स पोर्टल (GAP) के तहत की गई थी, जिसका उद्देश्य वीरता पुरस्कार विजेताओं की बहादुरी के कार्यों और इन बहादुरों की जीवन कहानियों के विवरण को छात्रों के बीच प्रसारित करना था, ताकि देशभक्ति की भावना को बढ़ाया जा सके और उनमें नागरिक चेतना के मूल्य पैदा किए जा सकें। वीरगाथा परियोजना ने वीरता पुरस्कार विजेताओं के आधार पर रचनात्मक परियोजनाओं / गतिविधियों को करने के लिए स्कूल के छात्रों को एक मंच प्रदान करके इस महान उद्देश्य को गहरा किया। इसके हिस्से के रूप में, छात्रों ने इन वीरता पुरस्कार विजेताओं पर कला, कविता, निबंध और मल्टीमीडिया जैसे विभिन्न मीडिया के माध्यम से विभिन्न परियोजनाओं को तैयार किया और रक्षा मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सबसे अच्छी परियोजनाओं को सम्मानित किया गया। इस परियोजना में राज्य स्तर के बाद राष्ट्रीय- स्तर पर WINNER छात्रा /छात्राओं को गणतंत्र दिवस 2024 समारोह नई दिल्ली में शामिल होने का मौका मिल सकता है। विस्तृत जानकरी के लिए निम्न लिंक के माध्यम से विस्तृत जानकारी प्राप्त किया जा सकता है –

https://innovateindia.mygov.in/veer-gatha-3/